# भूकंप की गलत भविष्यवाणी, वैज्ञानिक कटघरे में

**क्या** यह संभव है कि वैज्ञानिकों को इस बात के लिए कटघरे में खड़ा किया जा सके कि वे भूकंप की सही भविष्यवाणी करने में असफल रहे थे? हाल ही में इटली में ऐसा ही दिलचस्प मामला अदालत के सामने आया है।

इटली के भूंकप-जोखिमग्रस्त शहर ला अकीला के विंसेंज़ो विटोरिनी व अन्य लोगों ने देश के वैज्ञानिकों पर आरोप लगाया है कि उनकी गलत भविष्यवाणी के कारण शहर में जान-माल का काफी नुकसान हुआ और ये वैज्ञानिक लोगों की निर्मम हत्या के दोषी हैं।

मामला यह है कि 5 अप्रैल 2009 की रात शहर में छोटे-छोटे कई कंपन महसूस किए गए। विटिरोनी का कहना है कि आम तौर पर उनके यहां एक रिवाज़ रहा है कि जब हल्के झटके लगते हैं तो लोग घर से बाहर जाकर सोते हैं। लेकिन इस बार वैज्ञानिकों ने वक्तव्य दे-देकर यह समझाया कि खतरे की कोई बात नहीं है। बल्कि उन्होंने तो यहां तक कहा कि हल्के झटके बड़े भूकंप की आशंका को कम करते हैं।

वैज्ञानिकों की घोषणाओं को सुनकर लोग घरों से बाहर जाने की बजाय अंदर ही सो गए। और, रात करीब 3 बजे ज़बर्दस्त भूकंप आया (6.3 रिक्टर)। सारे भवन धराशायी हो गए, 309 लोग मारे गए, 1500 घायल हुए और कम से कम 65,000 लोग अस्थायी रूप से बेघर हुए। बड़ी संख्या में इमारतें भी ज़मींदोज़ हुई।

विटिरोनी और अन्य लोगों का कहना है कि यह सब इसलिए हुआ क्योंकि वैज्ञानिकों की सलाह के आधार पर लोग अपने पारंपरिक तौर-तरीकों को भुलाकर घरों में बने रहे। मुकदमे की सुनवाई इस हफ्ते शुरू होगी। इस मुकदमे से सम्बंधित आरोप सबसे पहले जून 2010 में सरकारी वकील ने व्यक्त किए थे। अंततः आरोप यह तय हुआ है कि इटली के 6 अग्रणी वैज्ञानिकों और एक सरकारी अधिकारी की लापरवाही की वजह से सैकड़ों लोग मारे गए हैं और ये लोग मानव हत्या के दोषी हैं।

इस आरोप की निंदा दुनिया भर में हो रही है। कई वैज्ञानिकों ने इटली के राष्ट्रपति को खुला पत्र लिखकर अपनी चिंता जताई है। उनका कहना है कि आज की स्थिति में भूकंप के समय व तीव्रता की सही-सही भविष्यवाणी करना असंभव है। ऐसे में किसी व्यक्ति पर यह आरोप लगाना बेबुनियाद है कि उसने भविष्यवाणी करने में लापरवाही बरती।

दूसरी ओर, फरियादियों का कहना है कि वे यह जानते हैं कि भूकंप की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। उनके मुताबिक मुद्दा वह नहीं है। मुद्दा यह है कि वैज्ञानिकों ने जिस विश्वास के साथ कहा कि कोई खतरा नहीं है, उसकी वजह से लोगों ने बचाव के सामान्य उपाय नहीं किए। वैज्ञानिकों ने यह भी ध्यान नहीं दिया कि शहर की आबादी का घनत्व क्या है और जोखिम के अन्य कारक क्या हैं। यदि उन्होंने इस बात पर ध्यान दिया था, तो लोगों को नहीं बताया। दोनों ही तरह से यह समस्यामूलक है।

अब देखने वाली बात यह होगी कि अदालत इस मुकदमे में क्या रुख अपनाती है। ***(स्रोत फीचर्स)***